

ष्णरीषा४ षाःभरेन्र व्याधारा स्वर्धारामध्या अस्य त्रेभी ह लेले लेंटे, प्रत्ल ल<u>ेळ</u>्छगसे, द्रेपासेंड*ए प*्र Cost of the second seco पॅर टेन्डामाल्ट



प्रमाष्ट्र इसेरेणामा (ब्बाटी ए (अमद्भूत) दर्ल अरभेषा एध्याप्रसाम ठीन्यार्थकार्याक्रमा स्ट<u>म्ब</u> टमन्रेष्टर र्गटम ५भेरपर्पा CLACALIN MARTING



टी में संटीय इस पण्डन लिष्ट्रम्ए ५२४ टुन्ने लगोप र्माटा<u>ज्य</u>धारणात्री टीजे स्टीय फ्रूनम् प्यानस्टल्च गासभाष्ट्रीमाए दर्ग्डररर



ाष्ट्रिस्ट ग्रोपाउभाजित **प्रधाल लेक्गीलहरू**४ **WETCH WEU WING** *लेभगालस*ण्ट प्रसन्त

ए॰णहें इंग्लिस स्वाप्त है एवं मोल्य, सर्वात्रे स्वाप्त ३३ १ वर्ष मार्थ है ।

*ኤዙሮ*୪

क स्वर्भ स्वामा भारते हुने स्वर्भ स्वर्य स्वर्भ स्वर्य मार्ध्रदर्ण इंग्रजी हे ये पाठर जा उत्रात

නුදුර අවනය නැහැෆ්වානු ෑ දැන ग्रोक्सिप लिळान प्रसटन्वट णाश्रमील ठीठार्क प्रमित्रीम प्रदर्क स्रियाम व्यापित स्वापित स्वापि महीया भारतीय सहिम हमन्य ह्यातीह एउद⁶ट जारण्यत राप्ता ब्राम के उर्घ हो हो है । मारात्थ्यम अद्धर ७०म भार म्थ തും തുടിയ വുടുന്നു വുടുന്നു उण्णात्रक्षण विश्वकृत्र विश्वकृत्र विश्वकृत्र र्जुमार प्रधामित प्राचित्र हिंदी हैं णभवर्गात घरीत राभ्यत्री भारतीम ॥ अञ्चयार्व्यात्र उमार्व्यर्था

ीणाह्यजातम अधर्र कि रक्षजैदर्भ द्वापाल जमद्रीम

ठत[्]ग्र मग्र पाने भारिक हर्स प्रोरम एएवर्ड भावर्द्र एपार्किड स्वरूटीयोम बीस रिजाल्ड प्रभावर्षेत्र विद्यावस्त भावप्रभावित ॥ भिग्नभन्त रगभरत्यात पारक मत्रस्यात रिवर्ष गणीयामस्यात भवरयोगम वीर विज्ञाल्य गर्वत् ,ौब्रदर्ह जार भिज्ञर ग्रण€ म

ಹುಟಿಂಬಳ್ಳು ಗುಗಳಿಯ ಉಗಿರುತ್ತು ಕುರುತ್ತಿಗಳು ಕಾಳುಗಿ ಕಾರ್ಟಿಸಿಕ್ಕು ಕಾರ್ಣಿಕ ಕರುಡ್ಡಿಕ ಕರುಡ್ಡಿಕು ಕರುಕ್ಷಿಕ್ಕು ಕರುಕ್ಷಿಕ್ಕು ह्यांटार्रम भिभाराग्रम होवर्डे हार्क्ड हरभाराग्रम रिक्र हर्माह होडाप्य हर्माह ०न्डर दर्श ग्रापाधीगात पाय्येस ॥ १० वर्गात्मण । पानाधीन्त्रय मात्रीम पाय्येस रुधीगात । प्राप्ति । प्रापति । प्राप्ति । प् भारतिस्थत हुम होर राज्ये रूटिया हैत राजहार सिर्ध स्थान राज्यार रहे प्राप्त प्रत्य प्राप्त होरा प्राप्त स्थान राज्या प्रत्य प्राप्त स्थान स

ठौरसार जहरूर हर्राञ्चभोर हर्राज्ञभेक् ार े ज्यंत इंतम स्वाप्यम ज्याराम क्र एन मार्र एल, लि एल ए लाण, त्राण व्यक्तला जमम् देशीर एये माण हो हे हरा अर्थ प्रभात महीम ण्यामणात रहणभेष्ट हण्याध्यात दुमान्य ऋताभ्रा प्राधिक श्रामिक्

हरू मीह जिल्ला है के उर्क स्रिमें प्रतिदिश्व रामित्र प्रमित्रीम टे गोंक्स्ट्रिय जांक्स्ट्रिय जांक्स्ट्रिय क्रिया है **अधिक कि वार्य कि मार्थिय जिल्ल** र्ह्मात्रेमए प्रेलीचटार ीणहरू प्रीलास्थ्यम स्थापितम प्पर्वेट एटाया साम प्राप्त कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य

भिक्षणञ्चर वर्ध प्रभन्न<u>र</u>ेण भारतात सर्वेश है अर भीर्वेश भिर<u>ुभव</u>

ब्राटा अस्ट्राज्य क प्राक्तेज म्या<u>त्वर</u> <u>श्रमः</u>ऽस्त् प्पमस्रोगारघभरदर्गात

र्जाग॰टग्रास॰ए४ യാരുക प्रिलेश प्रमुख प्रत्येष प्राप्त भी ५३ भेरिन्द्रीष Dr. Bry

न्धारा ने सिक्ता है सिक्त स्राध्य राजार्थ <u>भव</u>्या विष्ठ वर्ष व्याप्त स्था हो सहसारा भव्या भारते <u>प्र</u>ाह्म वा

ଅଫଙ୍କସଂସଅଟ ॥ 1) ୪୯୫%, ३୧, ୭୧, ୭୧, ୭୯୯ ଲା । ଏହି ଅଧ୍ୟୟ ୯୯୯ କ୍ରୟ ୪୯୯ ଜଣ ଓ ୪୯୯୯ । , ଜଣ୍ମ ଝ ास्त्रिक्षण विश्व हिन्दु अर्था स्वाप्त विश्व क्षाण्य विश्व कि स्वाप्त विश्व कि स्वाप्त क्षा कि स्वाप्त कि स् ीणीगाएए ीह्रमण ीर्णाएए रहें ।। ව 000,३३,२३,०३ छभर ७५ ५५% अभिर्फेट ।। <u>ಇವ</u>र ६ । <u>ಇವ</u>र सीएक ए॰४८७६ स्थः ३२,३२ एभरुल ४७<u>४८७</u> स्थःक लामार्क्या उंक वर्ष लोर्ज्य भ<u>ग्रहीता</u> पार्थ<u>भा</u>त रुखीत पामत्रीपारिका भरितात भ्रहीता भारते पामिर्म भ्रहीता भ्रहीत <u>१७४८</u>००१५४ एस ग्रहम॰० (धर्म ग्रात हि) ४७१७०१६ पामह्रीणार एउम्बर्ग मण ४७<u>६ ग</u>्रा ॥ भिरुत प्राधित राज्य भन्न अल्लास्य विभागम

॥ <u>भन्य</u> हेरू हरूर पारक्षीम लाग<u>्रका</u>रमाय भाग जन्म दर्भ . स्टर्श विप्रभूप होता वर सामित्र में अप्टा स्ट्रिस भा (इ.स.चाम) प्राणी प्रवेश प रह्मसायाध्यात सर्वात सर्वात किरोक्या प्रस्तिक राध्यात प्रस्तात स्थात स्थात स्थात सर्वे हार्ग करिला प्रमुख्य हिल रह्नउर्दाहरू पामहोणीएक भ्र<u>ञ्</u>ठा भर्द $^{\circ}$ नीय एउट्टिशासन $^{\circ}$ <u>भह</u>्यक भ्रद्रं रहे राज्यान<u>भ</u>्यक ।।भिक्तायभ्रदर्गा मममक भ्र<u>्य</u> ග්රාපණ්ග්ම ප<u>න්ජාග</u> මර්ගා පර්ලා පර්ලා මග වේ<u>වාග වාසයට</u> මිසි ස ව**ා**ග ෆසමස වේගා *ස*ව පන්<u>ජාග</u> මර්ගා भिष्य हे जिस्हा के विकास के निर्माण के निर्म

॥ १७४ ह्याद्य स्थाद्य स्थाद्य

ट॰ऽ॰आ<u>स्भार</u> पा॰ऽ॰स्भार पामहोभारगभरदांग रिप्रा पारुक्त

ा गिष्ठही देश भी सहरा ए र भास भारती है । भिद्रमार भा भारती पा॰ऽ<u>°भा</u>त रहा हो समुक्त भारत स्त्री क्षापार्वे सामार्थे उसा मनम रर्जाएक जाएक भागक रजाम एवं भागिक भागिक भरिता भर्टिक है है जिस्सा भागिक भाजन है उन्हें द ट्रक्क भारत्यम ग्रात्योगायक रूरी भारितम् ॥ वि ४५३१,३३,३३,३१३ रिक्क ट्रम्पमर्था मारिअ<u>र्थता</u>र पामर्काभारिक पार्ट<u>श्व</u>म रिक्कांप्रहार पामर्काभारिक पार्ट्य पार्ट्य विकास स्थानिक पार्ट्य पार्ट्य स्थानिक स्थानिक प्रतिस्थानिक प्रति स्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रति स्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्थानिक प्रतिस्य स्थानिक प्रतिस्था म⁵5 ००% ४५५५ भे<u>ष्ठव्य</u>ी के एपस्य भाषिक भाषिक अधित । अस्य ।

ଅଥା ୮୬୪୯୯ର ବ $a \setminus a$ ଧର୍ନ ପାୟା <u>भर</u>ू ଅଧ୍ୟା ଅ<u>ର୍ଦ୍ୟା</u>ଟ ମ<u>୍ବାଧ୍ୟା</u> स्रिल्ला होड ४९९८ व्यंगद

स्या पार<u>्रभात</u> लूप्पमहीणहण्डमें एभरुल ४५<u>४ल</u>० । ी७ ०००,००,२३,२ ह २३ प्रोह्रनिह लोडफ विप्रपर्धिं **ट्रमञ्जल मिल्लालाम क्रमञ्जल क्रमञ्जल** | 1<u> 44式</u>数 とりまとい たってがボ<u>わが</u> とうなりないある

हिटम ७७७५४ स्टिमास ीभेरहण<u>ा</u>श्चरभणायोत्

क्रिय प्रताम भाजात्र स्थान मडीइ ४भीड भिन्नदर्<u>गस्य</u> ४०भन्म ή म्हण भरद्रिल माठीज प्रभिद्धण ॥ भिक्ष्याञ्चरभ्याष्ट्रीरू ग्रीग्रंसिक्त मठीव ॥ ब्रिस्ट्रस्पाठि घर ३९३१ मध्यत्माक्त ताष्ट्रम भज्ञाहरू त्यस्य त्या<u>मि</u>त्यस्य प्रज्य स्थान टिप्प्रिक्टिश हिटा । चित्र क्रिक्टिश हिटा । **७८०० भारतक्रामान्य भाषान्य उत्प्रा** रहर ८ प्रणार घीरापणु पा॰रान् म्हपार्वस *™*. ≥©E,A.#...© ल्डिम, मार्चिम मार्ग केंद्र मार्ग केंद्र गञ्चदाण्या भाञ्चदर्डस्वर्णा रिव्हर्लेश । रिज्याज्याच्याच्या स्व हिटामर एटाटर मांचीम उप्पाटावर्टिंग सिंहा टेंग्टराहिंग हिंदी णिडण्यात्र भारिक्य रिर्द्धां स्थापिस मारिक्य प्रिक्तिम भारिक्य उद्धार्मात्म स्या निर्धानिकार विमान

॥ भिर्छर द्वस जीलक ह्याँप लजदर्ज HL Poll

Q: Manipur leingakna ching amasung tam thong mannana chaokhathannaba hotnei haibasi yaningbra?

POLL CLOSES AT MIDNIGHT

Yes No

Vote thadanabagidamak www.hueiyenlanpao.com da Visit toubiyu

NGARANG GI RESULT

Q: Shaktak che yaorabasu changlakpa thinggani haiba JCILPS ki protest asi chumbra?



π ധ $arsigma_o$ ഉനം $arsigma_o$!



णभटा म्हार होत्रहरू १२.३ भ⁶ भूष <u>अष्ठ</u>्यात्रक्ट टाण्डि<u>समा</u> मठीभार-विषद

:S3 किमान्द्रप्रात्ण ,र्वमद हरामां हिंदी जी भिर्मा विकास ንልጉን የደደፈ_ው ዝን ዘ∃ዝ ልቻጀኒ उभान्रजणाशीय रिवादक्षण र्यापि मिर्पार्थ ह्राचित द्रापति हो निर्मेश विकास स्थापित स्थाप णाभूतर मध्य २२.३ भ<u>भूष</u>म् ग्राप्ट टीन्रभ्णमण्ट ॥ "ଫଟ୍ଟ ଅଫଟ୍ଟ ଫାସଂମ୍ୟାୟ

-दर्जनास्त्र काभाभक्ष कामा टाघादटी र्गाणिय *व्य*ञ्जन्नस्य ऋएडिस्ड प्राप्त प्रभागार्थ प्राप्तुना **क्रिफ़्फ़ि**क्क व्याभार केलाल सन्महरूक क्रिस क्राप्त कर्माहरू केला है जात अन्य केला है जाता है जाता करता है जाता है जाता है जा ळेडए प्रात्त त्रहा है साथी। जीक्ष वेंद्र प्रात्ति क्षेत्र प्रात्ति के कारणा जावित के कारणा जावित के कारणा जीका के कि

प्राप्त क्रियार्थ प्रधार हिंदामार्थ स्थाप्त हिंदामार्थ स्थापन ছেচেবিস

स्ति अंदुर्ग प्रमुख्य प्रेह ज्ञुभीरमए प्रज्ञेत इसाल् ज<u>्ञ</u>ेह्म । प्रमुख्य इत्राम प्रमुख्य प्रमुख्य प्रमुख्य प्रमुख्य । <u>ज्</u>राज्ञेस रीयदर्व राजान्न हर देन १३ प्राप्त हम प्राप्त हम प्राप्त हर कि भाषाने हिंद हम हर हिंद हम हम हम हम हम हम हम हम हम

ाजियात्यात्य अध्यत्य अध्यत्य क्षात्राच्य क्षात्र क्षात्राच्य भाष्यात्राच्य भाष्यात्राच्य भाष्यात्राच्य

एभरण ४० राज्य के विस्तार क्षेत्र के क्षेत्र के कि के प्रात्म के कि के प्रात्म के प्रात्म के प्रात्म के प्रात्म वर्ष ३३ वागू भिजार प्रांतीस सुर्गाभिक भिजारिज्य उर्धे १५३ ति से अपने सहस्र १२.०१३ वर्ष महिल्य प्राप्ति भिजार्थ किया प्राप्ति । । विचार्ट जहुँ विद्यास सर्वे होता है जा है जिल्ला सर्वा है जिल्ला है जिला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है ്യായ ഷ്യ വ്യാപ്രവിവ ഥന്ദ്യിച്ച സ്വയ്ക്ക് വിവയില്ലെ വിവയിട്ടു വിവയിട്ടു വിവയിട്ടു വിവയിട്ടു വിവയിട്ടു വിവയിട്ടു ीन्दर्क जर्वाधानणा टाप्सादर्क क्रिक रह्म ॥ 'खीन्द्रें क्रारुमके णाइनक मळाँग जर्द्ध रज्ञोक्षक मीइभ्यू क्रियाइरुमामण वाराव्रहरूगाय के जिल्ला कारडा स्टाप्य करात प्रेरोक्ट पार्थ होतर पार प्राप्त का प्राप 0ණය වනය0ගයේ නයරුපුවේ ලාන ලාග<u>ුව</u>ාලාසන සවලුණ 0ම් වන්දැරව ලාගුවුවාලයන් සන්යාර් සිස්සා සන්සර0්න රුත गारुणसणा महीम प्राप्त ट्रेक्स लुक्क हुमार क्षान्य क्षान्य कार्य प्रत्येक प्र

ीछ४साम्यस्ट पार्यस्य रहेर पार्थिस लीठाम् स्रोलक्य जामक्र सार्धसम्म भजाम ∞ ॥ ∞ मुञ्जलिद σ ५ छत्र जिपाएभुल् र्रजार्धास ॥ वियाय प्रवित्याख कुर्वर्त छर्वर्ष छिणामस माग्र ४९५ मा अर्थाम अप्राप्त स्वर्या । । वियाय विवाय हर्स्य पारिक पारापारीमा हरूम भिमारापार अर्द्धा होमाम ह १२०३-०२०३ ५माम ,ोहरूम रिर्द्ध

रीडमडमर एस्ड्रीटादर्श्ड एमधेरू खण्यस्म भारक १०७७७ मार्थात्र भाषात्र । तर तम अभागा प्रमास भाउमधिक ४० भन्न राज्ञेक भाषा ।

ा भिरुदर्श ग्रमण *जा*रु<u>म</u>रुभा ग्रा<u>त</u>्मात्म्मा द्वार प्रतात भ्राप्तात्मात्मात्मात णास्यार्जन किटोटा<u>रेड</u>गार उद्या भराजनाति हो । णिटिया सभीर ॥ <u>भन्</u>यार्थक्रे भिष्य<u>भाषा</u>र राज्या राज्या राज्या

प्रियाण ग्रेस्ट्रिय अश्व अश्व अश्व (१८० °८ मध्या) भूम १८० भूम अल्या अल्या अल्याच्या भिष्टल्ला भूम प्राप्त अपना නග<u>ැව</u>ණයාස දෙන දෙනයා වස්වා දිණා පරාද දින්ද දෙනයා සමයා සාමා<u>වා</u>ය සනයා පනානයාය සනය

टेपाफिर सिटल स्था मुक्ति होता है जिस्सी अपेति होता है जिस्सी सिटल स्थाप होता है जिस्सी है जिस है जिस है जिस है अटाउर मान्या मिर कार प्राप्त हो हुने हो हुने हिन्यो प्राप्त कराम्या वर्षाय प्राप्त हुने पापोरामच्या पणि<u>र्जा</u>र स्थण्य ४४७८७५ स्थान ४८७५६ रज्यार्ड छहुँद देम पणि में भारदर्व निद्धा पारप्र पाय सदर्हाष्ट पामसीणीरिविध्य प्रभाम राजाम राजाम राजाम प्रभाव ह्या हास हो राजा राजामा राजामा राजामा राजामा राजामा राजामा राजाम र्ट्सा ४५८ मार्चीटामञ्जन्त र प्रामहीजामहीम ट्रींग्र । क्रिंट पर १५५६ व्याप्त १५५ व ीगारदर्क रिरेंद्र पारक्र भिष्पा सदर्हषा देखा मन्ज्ञा रडमंद्र ग्राप्पर्ड राज्यद*्र स*भिष्ठमार ग्राप्परमार लार<u>भर</u>दर्क ज्जलानी साम नामा सर्वात आर्थि विश्व किया कि निर्माण कि निर्मा कि एक हिन्द किया जिल्ला रण्यात हे (१८) उ. मध्या भारते ज्या अध्याम हेने जानके जानके जानस्य पारम रदर्व भर्टे जहण्यन्त्रक्त अ र्जीय हर १३ ४५ठेंर भिर्मद दर्डे ही तर्रे चार्ची १४ विषय और ोहमण (१०९५ मध्य) भारील प्राय एवर्ड प्रापल *ज्*भेए

णेटाक भन्नभातील लाजदम प्रधार प्रात्माधिल्यं प्रधार अध्याप्त स्थापि ३३३ भाषा भाषा १४३ भाषा १४४ भ एमिर ६ ए। इंजिया भारति हैं र्भाम १२-८४०२ उमाप्र गरेत मित्री सर्वेश्चर हैं। स्वाप्त प्रकार प्रकार प्रभाप ा रित्सार और सरिक्षेम रूपे अर्थ

എस्योणा॰स यस्भर सर्धा जिल्ला विच्ला विच्ला

न्धर्म ॥ <u>भन</u>्यार्ग्यार्ग्या सार्व्यस्त्र हिमभवर्त्व विषाण<u>्वर</u> भारत स्थाप्त स्थाप्त हिमभवर स्थाप्त स्थाप्त स्थाप णिक अधि हैं स्वर्धा है से स्वर्ध अधि है से प्रमण क्रमण क्रमण करिष्ठ अधि अधि अधि स्वर्ध अधि से स्वर्ध स्वर्ध स् बहुक मानीम हीत्रपार्यामील सप्ताहुन्स्पेन् हिमन्धर्द्ध नम्भ (रि) कि भ्य) भर्म्यामा विराण्य हन्म्याक्षिक प्र ගැන් සුවු දැන්න සාක්ත යාස්ත් සුව ගැන්න යා සැත්ව වන්න වන්න වන්න සහ සහ සැත්ව සහ සහ සැත්ව සහ සහ සැත්ව සහ සහ සැත්ව

रीऽण्डिभ्रस्त्रमा पारम गणराज्य प्राम हिन्ध र मारीज गणपीटाज्य पारिशार प्रजयपद्भ ोगाणीटास्टर्कणीस रहे ह्याहुस विषय <u>हर</u> भर्टन स्रोटक पार्टनीय एक स्थाप एक्सेस लिए कि एक ।। प्रश्नेरभाराण ଆରେ ।98ଅନ ଆଧିକ ଜନ୍ୟ ନଂଦବ୍ୟ ଅନ୍ତର୍ଗ ଜଣାପ୍ତକ ॥ । রেখাଠାଦ୍ଧ ୨୪୪ ମଧ୍ୟ ଅନ୍ତର୍ୟ ଅନ୍ତର୍ୟ ପ୍ରଧାନ , पार्य जहान्त्र जापिरमञ्जासभाभीताहरू हुन् उभागेन के के किया माराजन माराजन के उत्तर के प्रायम माराजन के प्रायम के अपने के अपने माराजन के अपने के अपने के ।। जिरागार्ग्स्यार्ग्स

ਨਾਈਆਰਟ ਹਹੜਾਂ ਸ਼ਾਹਤਕੀਜ਼ <u>ਹਿਤ</u>ਸਾਨਾ ਘੁਲੜੀਸ਼ ਆਨਸ਼ ਕਾਂਸ ਕਰਤੀਸ਼ ਭਨਾਘਾਰਟ

मध्य ॥ द्वीष्ठशास्त्र स्रोत स्राप्त स्थान करमण अन्य रजनात्राण ध्याप प्रमध्य रजनात्र रजनात्र

२००२ ईमाष्ट्रा ८०५ ८०५५ ५०५ ६० ५५ ५५ ॥ हो गाराहर् र प्रांटादर्श्यम रह्वेन्द्रार हरिष्ट १५५५ ५५५ ५५५ १ ॥ रियान्स्यान्त्र एएउदर्द्रीएणडान्त्र ह शिर्धरपुर रिणा यान्स्यन्या रिपाय एसए महीस स्वर्णस रिपार एथ

भर्या कर क्ष्मिस २२ जिस्री भाग वर्णा मा

॥ जिल्लाकाल स्ट्राजिन के जिल्ला विषय विषय हिन्स सम्बन्ध के स्वाधिक का अपने के का अन्य के अध्यक्त हिन्स हिन्स व ॥ <u>भन्य</u> जन्मन्त्र पामाम अस्त्रस्य रुपा॰ रु

ीणामर्ट्राफ दर्द्यम ॥ भिदर्द ी ग्राप्तपाभात भाग छन्द्र मध्य २८ भाग २२ विरुद्ध दर्ध स्वाध सहस्व । अधिदर्ध स्वाध सम्बद्ध मध्य २८ भाग महस्व । अधिदर्भ दर्ध स्वाध सम्बद्ध । र्दणीम रहें हाजर र्टाय सार्या (१९०१) एक्स त्रांचे लिला होला होला होला सहसा , जिस्के एक यंस एपार्वस ए (१९५४) एक यंप (१९५४) सब्बर्टा से स्व हाउँ भिन्न ह्राट्य भावर्य्यम । भिरप्पार्क हार्य स्रम जाउपार्थक हामा एक द्रोट्राध्वाम भावार्य अभ्याप्य हा हा हार्य हार्य क्षाप्रम ाणक ॥ भिरुद्ध रुनरंग कर पार्वता पानक रूक विश्व किया भिरानेमा रुद्धमा रुद्धमा रुप्ति हवाचिक राजाय वेद्य हें ह्य ीणस्रहरूँ टैर्जाब्स ीणहाजीय चारू माचाउँम जा पावर्च उपारित्रीमाँच विद्यारण ग्राह्म उसक्र । <u>भव</u>्यार्जर्स आस्रवस्थान चार्य मर्भ २१ विद्यार्भ र <u>अधा</u>र्वम ा गिरहोब्रामकार व्यान्तेक एट भारति हो का उपने प्रस्का १२ मिन्रोल

पार्रम रत्यज्ञान्त समधम सरस्त्रं रिपाए

गार्थ प्राप्त प्राप्ति सम्मारेष्टा प्राप्ति प्राप्ति स्वार्थ स

॥ दर्र ४ एजीमजीलर न्यर्र निल्दे रालम पालमण गमलभ्य निर्णा क्ष्यकात्राध्य भागनिष्य तथ्य भागनिष्य

ा भिरात विष्णाचाला है हे । स्थान हा स्थान स् ,४७ तिसम्य मरुपाल, भिरायम तिलम एकाम ज्याम हाराम हारा किरु<u>भ</u>त्रमा हर एडर्ब्स्य एलम्प्र तिलम त्रमहीम एकभर्सर मराप्यत ியාම්ජාවා්ෂාම ෆ සාරාෂා ක්රීත් වාර්ත් වාර්ත් වාර්ත් වාර්ත් වාර්ත් විස්ත්ව සහයා සහයා විස්ත්වය සහයා විස්ත්වය ස්වීත් සම්ප स्तर्भा । १७४१ न्यापर्यमा एरेसा परिसा । १५ प्रमुख सम दुर्घ ४ ४ एस से सम्बाधिक विभार पानि सम्बाधिक । १५ प्रमुख सम सम्बाधिक । യം उस महत्वाल भिल्ना किस्माम भिष्ठामा भाष्ठ प्रमाधिक प्रधारिक होलाम पान स्था एवर्ष पालम प्रमाधिक क्षा प्रहास किस उमस्पाधिम उपारिक्षस हर्ते उपार एक्षा दर्श्य में मिर्रमांग राभवांक राज्या राज्य साम कार्याधिम त्रंत उरिक्र एक्ष

॥ १००५ है मार्टिक प्रात्मिक । १५ वर्ष मार्टिक १०४ वर्ष १०४ वर्ष १०५ वर्ष १५ वर ग्रापार्यमा सर्वार भिवर्डयमें छहुम सथम प्रभामीत भिनेमश्चर्ड होश्वर्रश्चीर रहारुर्व्य उन्नामित मार्थ मार्थ सथम

ीटा है ज्य महत्वी जिस्सा पार्वि है ॥ थरभग हो त्या उपार्थ । जा होर्ज में हार्ल्य ीणहमहत्वाचि हीपन सहे एक मालसक समीत हो । उस्तर के साथ से साथ स्वाप्त हे के साथ साथ साथ हो के हो हो हो है हो है ह **०० मा अन्य कार्य कार्य कार्य कार्य व्याध्य कार्य कार** ैत्द सर्र रूपार्थ्य गापारिकाभाभरू ए एसमए समार्प्या गार्थिक एकारीएम सर्वाम भारिक्षा एक्षारमा स्व

... ह्र ८ दर्से इंस

'अन्य केल्या अवस्यानिक केंद्र हुए' മുൾംമുന്നു. മും-ന്യാപ്യയ് त्रएँतिष्ट जेए उठण जिंभी'

प्पष्ठम, एक्सोहीमा ए॰ह<u>म</u>ाम॰क ३३३ भ्रष्टम॰स्ट्राम॰ ,र्न्ज्ञमद ण्यमण आतार्या वाष्ट्रय राभर्य राभरा भाभाष्ट्रमा ။ එජීර් 'ෆභ<u>ගැන</u>ණ<u>ා</u>ග யැට්# භාග්ව# प्राध-वामान्म-वृक्ष ฐษาณะ टिमिंग मार्भिमार्भ प्रात्न तम् प्राप्त कार्य कार्या कार्य थिछीधीबार प्रायमण सन्धीमीड धारीछम भार ६२०३ ईमाप्र होन्देंन

॥ भिद्धर्व् भर्वत भिष्ट सम्मा भरमाधारी मा व्य ් නැප්පාර ක්වේකයා නැවන ක්

भएजार्**म किर**्मार क्षिरण प्राप्त करा मा प्रसन्न ह्रीयम्बर्धियार्थि । $\pi_{\circ \Theta_{\circ}}$ स्टीमक्

॥ भिरुदर्श भिराधिक भाग्ना भाग्ना । म् प्राध्यक्ष क्षाय क्षाय भ्रम

<u>रह्यभार</u> पारीम भारा भ भित्रस्थ ४५६ भी ५५ तस्थ क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया मध्य होत्रप्रेर प्रारंभ भागमिल <u>भिष</u>्टापाम विषय २२०२ ईमाप्य होन्द्रेल लहाग्र त्र का जिल्लास्टामा <u>भिजा</u>रम णिर्धिस िर्घर ह १२ म<u>िभा</u>एक गि छहें ४४४सक ६९८ जिस्**र्धि**दस ग्रेर र्सम प्राणमण <u>भन्</u>यतर्ग्ड मह्म पाहरू हन्नर्भ राजक ग्रेर गर्मह ैदम गिरारिष्ट अ०७%००७७ ४भर्गात जावाद उदर्ह रिपार्ट उन्हें होन्देर भिषीलक र्रमाष्ट

එ<u>න</u>්ට්ට් ක්රීම මෙනෙන් වනයා සැක්දු න්ටංවාග වනය र जनस्रहास<u>ी भ</u>ाष्म अ **प्रांति केंड्र, अर्टिडर एड लेंड्र क्रि.** (त्र र्स् स प्रशासक किपानी (रि. विक्रिप्रभाष्ट्र सम्भाष्ट्र सम जस्तर्व जाठापार्थन्तर्य एक जर्व एःमीजःग्र स्रञ्जा विज्ञीक्षांत्र ज्ञानिक क्षेत्र विकास करिया स्थानिक विकास क्षेत्र के अध्यापिक विकास क्षेत्र के अध्यापिक विकास क्षेत्र के अध्याप एस प्रमाण है के विचार माराजन विचार है है जिस्सा कि माराजन क्षेत्र प्रभाव कि माराजन कि ॥<u>°भग्र</u>णभीर्या एर्राष्ट्रा शर्रिक, राष्ट्रा ४°ए। मण्डा मण्ड भरणभारति ीगादर्ध्यक्र गर्दा पार्राहरूब भारित असीगर पालमक्र गर्हा कर कर् उं धामम एथारिएम ४°<u>४०</u>० र<u>भग्र</u>णर् एत्राण रहेण ° उप्पथीणपार्वेद १९५५ ७ अप्रोजन हुने प्रियम हो एक मा हि स

...हर दर्में रस

२८२२०२८४५ १०)-२२+ भठमण भन्ने पालमण ४०२२४३ ,२४४०८४२-२२२० पामलीण४७°मऽदर्सभार ७०२२८४-२२२० भठमण ७५३७९४ विमालाल४७५ विमालप